Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
e-ISJN: A4372-3118

शेखावाटी अंचल के मेले व त्योहार
(जल धरोहर के ऐतिहासिक–सांस्कृतिक अध्ययन के विशेष संदर्भ में)

हरलाल सिंह
पीएच.डी.–शोधार्थी व राजीव गांधी नेशनल रिसर्च फैलो
इतिहास व भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

डॉ. मंजु गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजकीय कन्या महाविद्यालय, टोंक।

शोध–सारांश

शेखावाटी भारतवर्ष के राजपूताना के जयपुर राज्य का अधीनस्थ प्रान्त रहा है। राव शेखा व उसके वंशजों द्वारा स्थापित तथा शासित इस अंचल की एक अलग समृद्ध संस्कृति व इतिहास है। इस क्षेत्र की लोक संस्कृति के अनेक प्रतिमान हैं जिनमें यहां के मेले व त्योहार लोगों के जीवन में समरसता, उमंग व उल्लास का संचार करते आये हैं। यह क्षेत्र विषम जलवायु वाला अर्द्ध–शुष्क प्रदेश होने के कारण यहां का जीवन सदैव ही जीवट शैली से ओतप्रोत रहा है। इसी जीवन शैली का परिणाम शेखावाटी की ऐतिहासिक जल धरोहर है, जिसके साथ जुड़े हैं यहां के मेले व त्योहार। धार्मिक आस्था के प्रतीक इन मेलो व त्योहारों सें क्षेत्र की बावड़ियां, कुएं, जोहड़, तालाब, कुण्ड पुर्नजीवित हो उठते हैं और जब इस जल धरोहर का सानिध्य मिलता है तो इनका निर्मल जल प्यास तो बुझाता ही है साथ ही इनके सानिध्य में भरने वाले मेले व इनसे जुड़ी सांस्कृतिक परम्पराएं जीवन में रोमांच भर देती है।

---

1. परिचयावली

शेखावाटी प्रदेश भारत के इतिहास व संस्कृति में एक प्रमुख स्थान रखता है। यह प्रदेश राजपुताना के जयपुर राज्य का सबसे बड़ा अधीनस्थ प्रान्त रहा है।[1] अपने वैभवशाली इतिहास, अनुपम कला व संस्कृति से सम्पन्न यह प्रान्त भारत के मानचित्र में उत्तरी–पूर्वी राजस्थान के मरूस्थलीय प्रदेश शेखावाटी में विशिष्ट स्थान रखता है। इसके अन्तर्गत सीकर, झुन्झुनूं ज़िले व चूरू ज़िले के दक्षिण–पूर्वी भाग को सम्मिलित किया जाता हैं।[2]

ऐतिहासिक दृष्टि से इसमें अमरसरवाटी, झुन्झुनूंवाटी, उदयपुरवाटी, खण्डेलावाटी, नरहड़वाटी, सिंघानावाटी, सीकरवाटी, फतेहपुरवाटी आदि कई भाग परिगणित होते रहे हैं। इनका सामूहिक नाम ही शेखावाटी प्रसिद्ध हुआ। मध्यकालीन शासक राव शेखा व उनके वंशजों द्वारा शासित प्रदेश 'शेखावाटी' कहलाता है।[3] यह प्रदेश राजपूताना के अन्तर्गत सबसे बड़ी निज़ामत के रूप में था। यह क्षेत्र 27°20′ तथा 28°34′ उत्तरी एवं 74°41′ तथा 76°6′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।[4] शेखावाटी के उत्तर तथा पश्चिम में भूतपूर्व बीकानेर राज्य,

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

दक्षिण–पश्चिम में भूतपूर्व जोधपुर राज्य, दक्षिण–पूर्व में तंवरावाटी व भूतपूर्व जयपुर राज्य तथा उत्तर–पूर्व में लुहारू तथा झज्जर राज्य स्थित हैं। परन्तु इसकी भौगोलिक सीमाएं सीकर और झुन्झुनूं दो जिलों तक ही सीमित मानी जाती रही हैं।[5] वर्तमान शासन–व्यवस्था में भी इन दो ज़िलों को ही शेखावाटी माना गया है।[6] परन्तु संस्कति की सीमाओं का इतिहास निर्धारण में कोई मापदण्ड नहीं है। सांस्कृतिक दृष्टि से इसकी सीमाएं शेखावाटी क्षेत्र की राजनीतिक व प्रशासनिक सीमाओं से बहुत दूर–दूर तक फैली हैं। यही कारण है कि मैंने अपने अध्ययन में चूरू ज़िले की चूरू तहसील की कुछ जल धरोहर को स्थान दिया है।

किसी भी देश की संस्कृति व इतिहास का निर्माण उस देश के लोगों द्वारा ही होता है। परन्तु वह उस अवस्था में महानतम् हो जाता है जब परिस्थियां प्रतिकूल हों और जीवन ठहर सा गया हो। शेखावाटी क्षेत्र ऐसी ही विकट एवं विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाला प्रदेश है।[7] जहां वर्षा की अल्पता ने यहां के लोगों को जीवट जीवन शैली अपनाने में अपना भरपूर योगदान दिया। इस जीवन शैली में जीवन के नवीन मूल्यों का सृजन हुआ। जिन्हें स्थापित करने में यहां के प्रत्येक स्त्री–पुरूष ने जिनसे जो भी बन पड़ा, अपना योगदान किया। 'जल' जीवन के लिए अनिवार्य है। मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है परन्तु शेखावाटी प्रदेश के संदर्भ में 'जल' जीवन से बढ़कर है। राजपूताना के मारवाड़ राज्य के उपरान्त यही वह क्षेत्र है जहां जल के प्रतिमान सदैव से ही उज्ज्वल रहे हैं। जल राशि के संचयन व संरक्षण के अद्वितीय उपादान इन प्रतिमानों के विलक्षण हस्ताक्षर कहे जा सकते हैं।[8] इन विपुल वर्षा जल राशि के भण्डारगृह कहे जाने वाले इन स्त्रोतों की इस क्षेत्र में भरमार है। जिन्हें कुएं, बावड़ियां, सर, सरोवर, जोहड़, तालाब, कुण्ड, टांके, नाडा, ताल, झीलें, बांध इत्यादि नामों से विभूषित किया गया है। वर्षा जल धरोहर के ये प्रतीक अपने भीतर न केवल अपने क्षेत्र के एवं इनसे सम्बद्ध इतिहास निर्माताओं के पवित्र प्रेम, त्याग, शौर्य व बलिदान की गाथाओं को समेटे हुए है बल्कि लोक संस्कृति की अनेक परम्पराओं व विशिष्टताओं को भी प्राणवायु प्रदाता की भूमिका निभाते आ रहे है।[9]

शेखावाटी प्रदेश की लोक संस्कृति के अनेक प्रतिमान हैं जो उसे एक विशेष अंचल के रूप में पहचान दिलाने में सक्षम है। इन्हीं सांस्कृतिक उपादानों में इस क्षेत्र में भरने वाले मेले व त्योहार शेखावाटी को जीवंतता प्रदान करते हैं। क्षेत्र के मेलों व त्योहारों का महत्व इस रूप में और भी बढ़ जाता है जब आजकल सांस्कृतिक आदान–प्रदान का दौर चल रहा है। विदेशी सैलानी व शोधार्थी बड़े ही उत्साह व उमंगों के साथ यहां आयोजित होने वाले मेलों व त्योहारों में सक्रिय भाग लेते हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र की उपादेयता का आकलन केवल क्षेत्र के मेलों व त्योहारों के अध्ययन तक सीमित नहीं है वरन् जल स्थापत्य विरासत के गुम्बजों के झरोखों से इनका मार्मिक चित्रण करना है। यह चित्रण उस समय बड़ा ही मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है जब क्षेत्र के जोहड़ व तालाबों के निकट लगे मेलों की भीड़ में से इनको देखा जाता है। ऐसा दृश्य क्षेत्र की कार्तिक स्नान परम्परा हो

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

या तीज उत्सव के अवसर पर बालिकाओं द्वारा किया जाने वाला गुड्डे–गुड़ियाओं के विसर्जन या फिर दुर्गाष्टमीं एवं गणेश चतुर्थी के अवसर पर देखा जा सकता है।

2. मेले[10]

मेले लोक संस्कृति के वाहक होते हैं। क्योंकि मेले यहां के लोक जीवन की किसी न किसी किंवदन्ती या ऐतिहासिक कथानक से जुड़ा होता है। यही वजह है कि इन मेलों के आयोजन में क्षेत्र का सम्पूर्ण लोक जीवन पूरी सक्रियता से भाग लेता है जिससे यहां की लोक संस्कृति जीवंत हो उठती है। इन मेलों के प्रति क्षेत्र के लोगों में गहरी भावनात्मक आस्था है। यही कारण है कि काफी समय व्यतीत हो जाने के बाद भी लोक आस्था के ये स्थल अपनी पहचान बनाये हुए हैं तथा समाज को सास्कृतिक एकता के सूत्र में पिरोये हुए हैं।

प्रत्येक धार्मिक स्थल पर वर्षा जल धरोहर का कोई ना कोई प्रतिमान अवश्य ही विद्यमान रहता है। मेलों के दौरान इनका विशेष ही महत्व होता है। इनकी अनुपस्थिति में इन मेलों का सफलतापूर्वक आयोजन किया ही नहीं जा सकता। इस वर्षा जल धरोहर के प्रतीकों में कुएं, बावड़ी, जोहड़, जोहड़ी, तालाब, कुण्ड, सर, सरोवर, ताल, तलाई, टांके, झीलें, नदियां, बांध इत्यादि सम्मिलित हैं। वर्षा जल धरोहर के ये स्वरूप सदियों से आयोजित हो रहे मेलों के मूक साक्ष्य हैं।

शेखावाटी क्षेत्र में विभिन्न धर्म और सम्प्रदायों के अनुयायी निवास करते हैं। इन सम्प्रदायों की अपनी परम्परायें और विश्वास हैं। जिनके आधार पर यहां समय–समय पर मेलों का आयोजन किया जाता रहा है।[11] जिनमें सभी धर्म सम्प्रदाय के लोग बिना किसी भेद–भाव के सम्मिलित होते हैं। इस क्षेत्र में आयोजित होने वाले मेलों को मोटे रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम, वे मेले जो पौराणिक देवी–देवताओं की गाथाओं पर आधारित होते हैं। द्वितीय, वीर पुरूषों, संत, महात्माओं के प्रति सम्मान, श्रृद्धा और आस्था अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से आयोजित किये जाने वाले मेले।

मेलों में जनमानस की आध्यात्मिकता, जीवन और संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है। मेला स्थल पर मोजूद वर्षा जल धरोहर से विदित होता है कि उस समय भी मेलों में नृत्य–गान, तमाशा, प्रदर्शन, क्रय–विक्रय, खान–पान आदि का इन्तजाम होता था, जिनके द्वारा साम्प्रदायिक सद्भावना, शिल्पकला सहित विभिन्न विद्याओं एवं कलाओं की अभिवृद्धि हुई।

मेलों में एक विशेष स्थान पर जन–समूह एकत्रित होता है, जिससे आपसी मिलन, नृत्य–गान, आदि से हमारी सांस्कृतिक एकता का अच्छा प्रदर्शन होता है। निरन्तर गृह कार्य में लगी पारिवारिक परिवेश में बंधी नवयुवतियों के लिये मेले ऐसे अवसर हैं जो उन्हें आमोद–प्रमोद के अवसर प्रदान करते हैं। जहां शेखावाटी के मुख्य मेलों में तीज का मेला, गणगौर का मेला, गूगोजी के मेले प्रसिद्ध हैं वहीं बदराणा जोहड़ का पशु मेला क्षेत्र का विख्यात पशु मेला है। दशहरा, जन्माष्टमी, शीतलाष्टमी, नवरात्री आदि त्योहारों पर भी यहां मेलों का

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

आयोजन होता है। मेरे शोध अध्ययन काल के दौरान भी इन मेलों का आयोजन होता था जो वर्षा जल धरोहर में या इनके समीप बनी ईमारतों आदि की दीवारों पर बने चित्रों से स्पष्ट होता है। इसके अलावा क्षेत्र में बनी हवेलियों, मन्दिरों, राजमहलों आदि स्थापत्य के अनेक स्वरूप भी तात्कालिक समय में मेलों के आयोजन की पुष्टि करते हैं।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्वों पर शेखावाटी क्षेत्र में अनेक स्थलों पर लगने वाले मेलों की तालिका निम्नवत् है–

तालिका–1

सीकर ज़िले में लगने वाले मेलों की तालिका

क्र.सं.	मेले का नाम	माह का नाम	स्थान का नाम	तहसील का नाम
1.	गुसांईजी का मेला	आश्विन माह	अठवास	फ़तेहपुर
2.	श्री बुद्धगिरीजी का मेला	फ़ाल्गुन माह	फ़तेहपुर	फ़तेहपुर
3.	रामदेवजी का मेला	भाद्रपद माह	भाकरवासी	फ़तेहपुर
4.	सती दादी का मेला	भाद्रपद माह	ढ़ाण्ढ़ण	फ़तेहपुर
5.	बोगनपीर का मेला	भाद्रपद माह	अलखपुरा बोगन	लक्ष्मणगढ़
6.	गोगाजी का मेला	भाद्रपद माह	नरोदड़ा	लक्ष्मणगढ़
7.	भैरोंजी का मेला	भाद्रपद माह	हर्ष	सीकर
8.	कदम का मेला	भाद्रपद माह	कदम का बास	सीकर
9.	जुराड़जी का मेला		मोरडूंगा	सीकर
10.	शाकम्बरी का मेला	चैत्र व आश्विन माह	सकराय	सीकर
11.	हनुमानजी का मेला	चैत्र माह	नीम का थाना	नीम का थाना
12.	जलझूलनी का मेला	भाद्रपद माह	नीम का थाना	नीम का थाना
13.	श्री बालेश्वर का मेला	फाल्गुन माह	खड़ग बीजपुर	नीम का थाना
14.	श्री डाकीरामजी का मेला	माघ माह	जीलो	नीम का थाना
15.	श्री हनुमानजी का मेला	चैत्र माह	प्रीथमपुरी	नीम का थाना
16.	श्री मीठारामजी का मेला	श्रावण माह	डोकन	नीम का थाना
17.	बास का मेला	माघ माह	वक्शीपुरा	नीम का थाना
18.	पृथ्वीराज का मेला	चैत्र माह	सिरोही	नीम का थाना
19.	भैरोंजी का मेला	भाद्रपद माह	श्रींगस	श्री माधोपुर
20.	श्री जगदीशजी का मेला	भाद्रपद माह	सीपुर	श्री माधोपुर
21.	हनुमानजी का मेला	चैत्र माह	कांवट	श्री माधोपुर
22.	सती माता का मेला	चैत्र माह	काचरड़ा	श्री माधोपुर
23.	पोलायाम का मेला	चैत्र माह	हांसपुर	श्री माधोपुर
24.	केमला का मेला	भाद्रपद माह	गुरारा	श्री माधोपुर
25.	सतीजी का मेला	भाद्रपद माह	कोटड़ी लुहारवास	श्री माधोपुर
26.	त्रिवेणीजी का मेला	भाद्रपद माह	अजीतगढ़	श्री माधोपुर

(स्रोतः परिमाणर्गण के दौरान प्राप्त जानकारी एवं अनुभव के आधार पर)

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
e-ISJN: A4372-3118

तालिका–2

झुन्झुनूं ज़िले में लगने वाले मेलों की तालिका

क्र.सं.	मेले का नाम	माह का नाम	स्थान का नाम	पंचायत समिति का नाम
1.	केशरजी का मेला	भाद्रपद सुदी अष्टमी	बाडेट	अलसीसर
2.	श्री रायमाता का मेला	आश्विन अष्टमी	गांगियासर	अलसीसर
3.	गोसांईजी का मेला	आश्विन सुदी दूज	लादूसर	अलसीसर
4.	परमहंस बाबा चिमनगिरी महाराज का मेला	फाल्गुन सुदी द्वितीया	बीरमीं	अलसीसर
5.	चिरजयास का मेला	भाद्रपद माह	बुडानिया	चिड़ावा
6.	जोडिया का मेला	चैत्र शुक्ल नवमी (रामनवमी)	किडाना	चिड़ावा
7.	छापड़ा का मेला, बाबा गुगा के प्रति श्रृद्धा	भाद्रपद माह	सोहली	बुहाना
8.	बाबा लालदासजी का मेला	फाल्गुन सुदी ग्यारस	मुरादपुर	बुहाना
9.	रामूशाद का मेला	आसोज बदी दूज	हीरवा	बुहाना
10.	मोहरवाली का मेला	पूर्णिमा	सिंघाना	बुहाना
11.	बाबा बूटीनाथ का मेला	चैत्र सुदी पंचमी	पुहानिया	बुहाना
12.	बाबा राघवदास का मेला	चैत्र सुदी नवमीं	कांकड़ा	बुहाना
13.	कुई वाला मेला, संत सीतानाथजी की याद में	चैत्र शुक्ल नवमी (रामनवमी)	जैतपुर	बुहाना
14.	शीतला माता का मेला	चैत्र मास की सप्तमीं व अष्टमीं	बगोरा	उदयपुरवाटी
15.	हीरामलजी का मेला	प्रतिमाह शुक्ल पक्ष की पंचमी	पौंख	उदयपुरवाटी
16.	अमर शहीद मेला (करणीराम, रामदेवजी)	13 मई	चंवरा	उदयपुरवाटी
17.	भोमियाजी का मेला, शहीदों के बलिदान स्मृति के रूप में	फाल्गुन सुदी चौदस	बामलास	उदयपुरवाटी
18.	पशु मेला	चैत्र व भाद्रपद माह	चंवरा	उदयपुरवाटी
19.	बद्रीनाथ का मेला	वैशाख की आखातीज	टीटनवाड़	उदयपुरवाटी
20.	जमवाय माता का मेला	आसोज सुदी नवमीं	भोड़की	उदयपुरवाटी
21.	सुन्दरदासजी का मेला	भाद्रपद पूर्णिमा	सराय	उदयपुरवाटी
22.	बाबा भोमनाथ का मेला	प्रतिमाह अमावस्या	डरीकी	सूरजगढ़
23.	मोखा का मेला, श्री सुखदेव पाण्डे के जन्मदिन के अवसर पर	13 अप्रेल	मोखा	सूरजगढ़
24.	केशवजी का मेला	फाल्गुन सुदी द्वादशी	कुलोठलो	सूरजगढ़
25.	रेजड़ी माता का मेला	चैत्र शुक्ल द्वादशी	काजड़ा	सूरजगढ़
26.	पाबूजी रामनाथजी का मेला	आश्विन सुदी दशमी	समसपुर	झुन्झुनूं
27.	श्री दुर्गाजी का मेला	चैत्र सुदी अष्टमीं	खतेहपुरा	झुन्झुनूं
28.	दरमा खां पीर जी का उर्स	आसोज शुक्ला द्वितीया	घोड़ीवारा कलां	नवलगढ़
29.	वैशाख पूर्णिमां का मेला	वैशाख सुदी पूर्णिमां	किरोड़ी	नवलगढ़

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

30.	महामाइयों व भैरूजी का मेला	चैत्र व भाद्रपद माह	खिरोड़	नवलगढ़
31.	गोसांई बाबा का मेला	चैत्र पूर्णिमा	गोठड़ा	खेतड़ी
32.	बाबा केशवदासजी महाराज का मेला	चैत्र सुदी चौदस	माधोगढ़	खेतड़ी
33.	श्री सुन्दरदासजी का मेला	भाद्रपद शुक्ला चौदस	गाडराटा	खेतड़ी
34.	बाबा रामेश्वरदासजी का मेला	चैत्र शुक्ल नवमी (रामनवमी)	बसई	खेतड़ी
35.	बाबा पूर्णमल महाराज का मेला	वैशाख शुक्ला अष्टमीं से द्वादशी तक	नालपुर	खेतड़ी

(स्रोतः परिमाणर्गण के दौरान प्राप्त जानकारी एवं अनुभव के आधार पर)

शेखावाटी के प्रमुख बड़े मेले प्रायः सभी नगर, ग्राम व कस्बों में लगते हैं। जिनमें गणगौर का मेला चैत्र सुदी तृतीया, तीज का मेला श्रावण शुक्ल तृतीया, बालाजी का मेला चैत्र पूर्णिमा व वैशाख सुदी दूज, गोगाजी का मेला भाद्रपद कृष्ण नवमीं, शीतला माता का मेला शीतला सप्तमीं व अष्टमीं, जन्माष्टमीं चैत्र बदी अष्टमीं, रामदेवजी का मेला भादवा सुदी नवमीं से ग्यारस तक व भैरूंजी का मेला माघ बदी सप्तमीं को भरने वाले क्षेत्र के प्रमुख मेले हैं।

यद्यपि शेखावाटी में लगने वाले लगभग सभी मेलों का वर्षा जल धरोहर से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सम्बन्ध है। यहां इस क्षेत्र में लगने वाले उन मेलों का सविस्तार विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है जिनका जल धरोहर के साथ सीधा सम्बन्ध है। ये प्रमुख मेले हैं–

2.1 लोहार्गल का मेला– लोहार्गल राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के झुन्झुनूं ज़िले से 70 किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर अरावली पर्वत की घाटी में बसे उदयपुरवाटी कस्बे से 10 किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम में स्थित है। यह राजस्थान का पुष्कर के बाद दूसरा सबसे बड़ा तीर्थ है। जिसका सम्बन्ध पाण्डवों, भगवान परशुराम, भगवान सूर्य व भगवान विष्णु से है। यह स्थान इस क्षेत्र की लोक सांस्कृति पर आधारित एक माह तक लगने वाले मेले एवं धार्मिक आस्था के अटूट विश्वास का प्रतीक ही नहीं वरन् राजस्थान का पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाला स्थल भी है।

जनश्रुति के अनुसार महाभारत युद्ध विजय के पश्चात् पाण्डव अपने परिजनों की हत्या के पाप से चिन्तित थे। लाखों लोगों के पाप का दर्द देखकर श्री कृष्ण ने उन्हें बताया कि जिस तीर्थ स्थल के तालाब के पानी में तुम्हारे अस्त्र–शस्त्र गल जायेंगे वही तुम्हें मन की शान्ति देगा। पर्यटन करते–करते पाण्डव लोहार्गल आ पहुचे तथा जैसे ही उन्होंने यहाँ के सूर्यकुण्ड में स्नान किया, उनके सारे अस्त्र–शस्त्र गल गये। इसके बाद भगवान शिव की आराधना कर मोक्ष की प्राप्ति की। उन्होंने इस स्थान के महत्व को समझ कर इसे तीर्थराज की उपाधि से विभूषित किया।

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

प्राचीन जनश्रुति के अनुसार लोहार्गल स्थित सूर्यमंदिर व सूर्यकुण्ड का निर्माण काशी के राजा सुर्यभान ने करवाया था। यह हिन्दुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। लोहार्गल भारत के प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है। महर्षि व्यास के वचनानुसार– ''लोहस्य अर्गलेव स्यात् पापानां सन्निरोधकम् यत्रत् लोहार्गलं नाम तीर्थ गुह्यतमं भुवि।'' अर्थात् लोहे की अर्गला (सांकल) की भांति यह तीर्थ हृदय में पाप पुंजको को नहीं घुसने देता। अतएव इस गुप्त तीर्थ को लोहार्गल कहते हैं। हेमाद्रि संकल्प में भी चतुर्दश गुप्त तीर्थों में इस तीर्थ का उल्लेख मिलता है। लोहार्गल महात्म्य के अनुसार इस तीर्थ स्थान पर अनेक ऋषि महर्षियों ने समय–समय पर कठोर तपश्चर्या कर अपने लोकोत्तर प्रभाव का परिचय दिया। वस्तुतः यह एक ऋषि भूमि है। लोहार्गल में अवस्थित सूर्यकुण्ड से निकलने वाली जलीय धारा की तुलना बद्रीकाश्रम से निकलने वाली गंगा से करके इसके गौरव व महत्व को प्रतिपादित किया गया है।[12]

लोहार्गलस्य गंगायाः वर्दयाख्याश्रमस्य च।
न भेदो ही भया दृष्टि वादसत्य चच्मि शौनक।।

इस तीर्थ का वर्णन स्कन्ध एवं वराह पुराण जैसे धर्मग्रन्थों में भी मिलता है। आदि वराह पुराण में भी लोहार्गल का उल्लेख मिलता है। जिसमें देवी गुप्त तीर्थों के बारे में भगवान आदि वराह से पुछती है और भगवान उसका उत्तर देते हैं।[13] सूर्यकुण्ड के समीप ही पश्चिम दिशा में वराह कुण्ड बना हुआ है। इस कुण्ड में बने वराहालय के समीप एक पत्थर की बनी भारी गदा रखी हुई है।[14]

कहा जाता है कि महर्षि परशुराम ने अपने पापों का प्रायश्चित् करने के लिए इस स्थान पर वैष्णव यज्ञ करवाया था।[15] जिसका वर्णन स्कन्ध पुराण के रवाखण्ड में भगवान परशुराम कृत विष्णु यज्ञ के श्लोक में भी मिलते हैं। यहां यह स्मरणीय है कि भगवान परशुराम द्वारा स्थापित एवं पाण्डवों द्वारा पूजित शिवलिंग आज भी सूर्यकुण्ड के मुख्य प्रांगण में मौजूद है।

यहां श्रावण माह में कावड़ियों[16] का मेला लगा रहता है और सम्पूर्ण शेखावाटी बोल बम तड़क बम के जयकारों से गुंजायमान होती रहती है। यह माह रोमांचित कर देने वाले भगवान शिव के चलित मन्दिरों से एक नवीन दुनिया का आभास कराता है। भाद्रपद माह में श्रीकृष्ण जन्माष्टमीं से अमावस्या तक मालकेतु बाबा के नाम पर पहाड़ों की 24 कोसीय परिक्रमा होती है। जिसमें हजारों लाखों नर–नारी परिक्रमा कर पुण्य लाभ कमाते हैं। पुराणों में इस परिक्रमा का महात्म्य अनन्त फलदायी बताया है। यह परिक्रमा इसलिए और भी ज्यादा प्रासंगिक हो जाती है कि श्रावण मास का बरसात का महीना जिसमें प्रकृति अपने सम्पूर्ण यौवन में होती है और श्रृंगारित भी। इस हरे–भरे एवं स्वच्छ वातावरण में औषधीय गुणों से लबरेज पेड़–पौधों से आती शुद्ध ताजा हवा का लुत्फ लोगों को तरोताजा बना देता है। फिर स्वच्छ मन की शुद्धता की खुशहाली की कामना के साथ धार्मिक अनुष्ठान इसमें चार चाँद लगा देता है। इस परिक्रमा में तीर्थाटन के साथ पुण्यों का अनोखा मिश्रण दिखाई देता है। सात

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

दिवसीय इस परिक्रमा का प्रारम्भ एवं समापन सूर्यकुण्ड में स्नान से ही होता है। इस दौरान तीर्थयात्री सूर्यकुण्ड सहित 9 स्थलों पर स्नानादि से निवृत हो दान पुण्य करता है। ये स्थल हैं– ब्रह्मकुण्ड (ज्ञान वापी), कर्कोटक तीर्थ (कोटिश्वर शिव), शक्रतीर्थ, कुहकुण्ड, नागकुण्ड, टपकेश्वर, शोभावती एवं खुरकुण्ड। इन सभी में स्नान का अपना अलग ही महात्म्य है। इस समय दान–पुण्य करने वाले सेठ–साहूकारों के भारी मात्रा में खान–पान के भण्डारे लग जाते हैं। परन्तु ज्यादातर लोग दान में मिले भोजन का प्रयोग नहीं करते हैं। इसके अतिरिक्त यहां प्रतिवर्ष माघ मास की सप्तमीं को सूर्यसप्तमीं महोत्सव मनाया जाता है, जिसमें भगवान सूर्यनारायण की शोभायात्रा के अलावा सत्संग व प्रवचन के साथ विशाल भण्डारे का आयोजन भी किया जाता है।[17]

लोहार्गल के सूर्यकुण्ड से उत्तर की ओर मुख्य मार्ग पर बाबा रामदेव मन्दिर के समीप ही एक ज्ञान वापी (बावड़ी) एवं पाण्डव कुण्ड बना हुआ है। इन जल धरोहरों से थोड़ी ही दूरी पर एक दूसरी विशाल बावड़ी है जिसका निर्माण यहां के महात्मा चेतनदासजी ने करवाया था। यह बावड़ी राजस्थान की विशाल बावड़ियों में से एक है। सूर्यमन्दिर की पहाड़ी पर वनखण्डीजी का मन्दिर है जो दूर से ही नज़र आ जाता है। इस मन्दिर के पास एक जल स्त्रोत भी है जिसमें सदैव पानी भरा रहता है। सूर्यकुण्ड के पश्चिम में प्राचीन शिव मन्दिर, हनुमान मन्दिर तथा पूर्व दिशा की ओर प्राकृतिक झरना व भीम गुफ़ा स्थित है। यहां से थोड़ी दूरी पर लगभग 400 सीढीयाँ चढने पर मालकेतजी के दर्शन किए जा सकते हैं।

2.2 खाटूश्यामजी का मेला– ज़िला मुख्यालय सीकर से खाटू 48 किलोमीटर दूर दक्षिण–पूरब में स्थित दातारामगढ़ तहसील में एक ग्राम है। इस ग्राम में श्यामजी का देश–विदेश में विख्यात मन्दिर होने के कारण इसे खाटूश्यामजी कहते हैं।[18] श्यामजी शेखावाटी में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष में भगवान श्री कृष्ण के ही एक रूप माने जाते हैं। कहावत है कि श्याम बाबा बर्बरीक के सिर के रूप में खाटू की भूमि में समाये रहे। वे कुण्ड के पास खड़ी गाय का दूध देवकला से खींचकर पीने लगे। अतः गाय के मालिक ने उस स्थान को खुदवाया तो वहां श्याम बाबा की मूर्ति निकली। तत्पश्चात् वहीं पर उसे स्थापित करा दिया गया।[19] यहां पर फाल्गुन तथा कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की एकादशी व द्वादशी को वर्ष में दो बार मेला भरता है। इस मेले में देश–विदेश से लाखों श्रृद्धालु श्यामजी के दर्शनार्थ आते हैं। मेले में कुछ जातरू अपनी मनोकामना की सिद्धी प्राप्ति से पूर्व व पश्चात् अपने निवास स्थल से ही हाथ में बड़े–बड़े निशान लिये नंगे पांव पैदल बाबा के जयकारे बोलते हुए आते हैं। कुछ पेट के बल श्याम बाबा को दण्डवत् प्रणाम करते हुये दरबार में पहुंचते हैं और श्यामजी के दर्शन कर कृतार्थ होते हैं। बाबा के दर्शन के पश्चात् श्याम बाबा के जलकुण्ड में स्नान करते हैं।[20]

मेला अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों से आई हुयी अनेक कीर्तन मंडलियां दिन–रात श्यामजी के भजन गाती हैं। यहां भक्तगण जात, जडूलों व विभिन्न मन्नतों की प्राप्ति के लिए आते रहते हैं। मेले में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये राजस्थान सरकार व ज़िला प्रशासन द्वारा विशेष प्रबन्ध किये जाते हैं। श्याम बाबा को मुख्य रूप से

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

चूरमें का भोग चढ़ाया जाता है। यहां दूर–दराज के श्रद्धालुओं के ठहरने व आराम करने के लिये अनेक धर्मशालायें बनी हुयी हैं।[21]

2.3 शाकम्बरी का मेला– शेखावाटी का यह शाकम्बरी शक्तिपीठ सीकर से 60 किलोमीटर दूर उदयपुरवाटी के पास स्थित है। यह शेखावाटी की प्राचीन धार्मिक नैसर्गिक सौन्दर्य स्थली है। इस प्राचीन मन्दिर में विक्रमीं संवत् 749 के तीन शिलालेख उपलब्ध है जिसके अनुसार चौहान राजा दुर्लभराज के भतीजे सिद्धराज ने शकदेवी (शाकम्बरी) का मण्डप बनवाया था। कहा जाता है कि देवी ने दुर्भिक्ष काल में फल व वनस्पति से जीव जगत की प्राण रक्षा की थी।[22]

नवरात्रों में यहां बड़ा मेला लगता है। भक्तगण यहां स्थित सप्तकुण्डों में स्नान कर माता के दर्शन लाभ पाते हैं। पूर्व में यहां स्थित सप्तकुण्डों में निरन्तर जल प्रवाहित होता रहता था। परन्तु ज़िला प्रशासन के द्वारा यहां बोरवैल खुदवाये जाने के कारण इन कुण्डों में प्रवाहित होने वाला जल बंद हो गया। फिर भी यहां नवरात्रों के अलावा भी पर्यटकों व भक्तों का तांता लगा रहता है।

2.4 जीण माता का मेला– चौहानों की कुलदेवी के रूप में पूजित जीणमाता का भव्य मन्दिर अरावली की सुरम्य पहाड़ियों में अवस्थित है। यह मन्दिर सीकर ज़िला मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर दूर दक्षिण में जयपुर–बीकानेर राजमार्ग पर स्थित गौरिया रेलवे स्टेशन से 15 किलोमीटर पश्चिम–दक्षिण में रैवासा की पहाड़ियों में स्थित है।

जीण मां भगवती का बहुत प्राचीन शक्ति पीठ है। जिसका निर्माण कार्य बड़ा ही सुन्दर व सुदृढ़ है। मन्दिर की भित्तियों पर तान्त्रिकों एवं वाम मार्गियों की प्रतिमायें चिपकी हुई है।[23] जिससे सिद्ध होता है कि इस सिद्धान्त के मतावलम्बियों का इस मन्दिर पर कभी अधिकार रहा है या उनकी साधना स्थली रहा है। मन्दिर के देवायतन का द्वार सभा मण्डप में पश्चिम की ओर है और यहां मां जीण भगवती की अष्टभुजी आदमकद मूर्ति प्रतिष्ठापित है। सभा मण्डप पहाड़ के नीचे मन्दिर में ही एक ओर मन्दिर है जिसे गुफा कहा जाता है जहां जगदेव पंवार का पीतल का सिर और कंकाली की मूर्ति है। मन्दिर के पश्चिम में महात्मांजी की तपोभूमि व जलकुण्ड है जिसे क्रमशः 'धूणा' व 'माताजी का सर' कहा जाता है।[24]

जीण माता मन्दिर में प्रतिवर्ष चैत्र सुदी एकम् से नवमीं व आसोज सुदी एकम् से नवमीं में दो विशाल मेले लगते हैं जिनमें देश भर से लाखों की संख्या में श्रृद्धालु आते हैं। भक्तों की मण्डली द्विवार्षिक नवरात्रि समारोह (प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन/आसोज माह में शुक्ल पक्ष की नवरात्रि मेले के समय) के दौरान एक बहुत ही रंगीन नज़र हो जाती है। इस पावन पर्व पर राजस्थान के बाह्य अंचल से भी लोग आते हैं। मन्दिर के बाहर मेला अवसर पर सपेरे मस्त होकर बीन बजाते हैं। राजस्थान के सुदूर अंचलों से आये लोग विशेषकर नव विवाहित युगल गठजोड़ा की जात लगाते हैं। अपने बच्चों का जडूला (केश मुण्डन) करते हैं और अपनी

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

सामर्थ्यानुसार सवामणी, छत्रचंवर, झारी, नौबत, कलश आदि भेंट करते हैं। मन्दिर के गर्भगृह में सदैव अखण्ड जोत जलती रहती है।[25]

2.5 गोगाजी का मेला– शेखावाटी में गोगाजी के थान (देवरा, मेड़ी या देवस्थान) लगभग हर ग्राम व कस्बे में स्थित हैं। परन्तु गोगाजी का प्रसिद्ध मेला बिसाऊ के पूरब में एक बहुत ऊंचे टीले पर प्रतिवर्ष भादवा सुदी नवमीं को भरता है। इस अवसर पर हजारों भक्तगण यहां आते हैं और श्रृद्धा से नारियल चढ़ाते हैं। बिसाऊ के मुख्य मार्गो से नाचते गाते हुए दो दलों के निशान आते है जो मेड़ी स्थल पर घण्टों अपना नृत्य प्रदर्शन करते है। इनका मुख्य वाद्य डेरू, कांसी का बाटका, ढ़ोल आदि होते हैं। ये लोग नृत्य करते हुये लोहे की सांकळे अपने सिरों पर मारते हैं तथा गालों के आर–पार त्रिशूल चुभा लेते हैं। यहां के लोग कहते हैं कि पहले यहां नंगी तलवारों पर भी नृत्य हुआ करता था। इनको गूगोजी की छाया भी आती है। छाया की स्थिति में निसृत उनके वचन सत्य सिद्ध होते हैं।[26]

गोगामेड़ी के निर्माण के सम्बन्ध में अभी तक कोई प्रामाणिक जानकारी प्रकाश में नहीं आयी है। किन्तु मेड़ी के पूर्व व दक्षिण की ओर बहुत सुन्दर कुआं, कोठी विश्राम स्थल बने हुए हैं जिनके निर्माण के सम्बन्ध में दीवार पर 'श्री 108 बाबा काली कमली मखनानन्द व बिसाऊ नरेश श्री विष्णुसिंह की आज्ञा से यह कोठी मखनानन्दजी ने संवत् 1987 में बनवाई।[27]

3. त्योहार

त्योहार भारत के किसी भी प्रान्त या अंचल की संस्कृति के प्राण रहे हैं। जिनका अपने इतिहास निर्माण में विशिष्ट भूमिका रही है। मेरे अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी में प्रायः सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं एवं अपने–अपने त्योहारों को बड़े ही उल्लास और धूमधाम के साथ सब मिल जुल कर मनाते हैं। साम्प्रदायिक सौहार्द्ध इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषता रही है जहां सभी धर्मों के लोग एक साथ मिलकर त्योहारों की खुशियां मनाते हैं। उत्सवों एवं त्योहारों के समय वर्षा जल धरोहर के विभिन्न स्वरूपों को विशेष रूप से सजाया जाता है जहां श्रृद्धालु जल–स्त्रोत में स्नान के उपरान्त् मन्दिरों और मस्जिदों में विशेष प्रार्थना करते हैं। जिसमें हजारों की संख्या में भक्तगण सम्मिलित होते है। शोध काल में निर्मित कुओं, बावड़ियों, जोहड़ों, तालाबों इत्यादि की दीवारों, छतरियों व प्रवेश–द्वारों पर बने भित्ति–चित्र एवं इनके निकट बने मन्दिरों में प्रतिष्ठापित मूर्तियां तत्कालीन समय में मनाए जाने वाले त्योहारों की चिरस्थायी व भावपूर्ण स्मृति को सजीव रूप से हमारे समक्ष उपस्थित करते हैं। स्त्रियां के गाए गए गीतों, हंसी ठिठोली, मेंहन्दी–माण्डणों व व्रतों द्वारा इन त्योहारों व उत्सवों में नई उमंग भर जाती है।[28]

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
e-ISJN: A4372-3118

तालिका–3

शेखावाटी में मनाये जाने वाले उत्सवों व त्योहारों की तालिका

क्र.सं.	माह का नाम	उत्सव व त्योहार मनाए जाने वाली तिथि	उत्सव व त्योहार का नाम
1.	चैत्र	कृष्ण पक्ष एकम् कृष्ण पक्ष अष्टमीं शुक्ल पक्ष तृतीया शुक्ल पक्ष नवमीं	धुलेण्डी शीतलाष्टमीं या बासेड़ा गणगौर मेला श्री रामनवमीं
2.	वैशाख	शुक्ल पक्ष तृतीया पूर्णिमा	हलसोतिया, खीचड़ी या आखा तीज बुद्व पूर्णिमा
3.	ज्येष्ठ		
4.	आषाढ़	पूर्णिमा	गुरू पूर्णिमा
5.	श्रावण	शुक्ल पक्ष तृतीया पूर्णिमा	हरियाली तीज रक्षा बन्धन
6.	भाद्रपद	कृष्ण पक्ष अष्टमीं कृष्ण पक्ष नवमीं अमावस्या शुक्ल पक्ष चतुर्थी शुक्ल पक्ष दशमीं	श्री कृष्ण जन्माष्टमीं गोगानवमीं व मालकेतु बाबा की 24 कोसीय परिक्रमा प्रारम्भ लोहार्गल स्थित सूर्यकुण्ड स्नान गणेश चतुर्थी श्री रामदेव जयन्ती, मेला व तेजा दशमीं
7.	आश्विन	शुक्ल पक्ष एकम् शुक्ल पक्ष अष्टमीं शुक्ल पक्ष नवमीं शुक्ल पक्ष दशमीं	नवरात्रा स्थापना दुर्गाष्टमीं महानवमीं विजयादशमीं
8.	कार्तिक	कृष्ण पक्ष एकम् कृष्ण पक्ष चतुर्थी अमावस्या शुक्ल पक्ष एकम् शुक्ल पक्ष द्वितीया शुक्ल पक्ष अष्टमी पूर्णिमा	कार्तिक स्नान प्रारम्भ करवां चौथ दीपावली गोवर्धन पूजा भाई दूज गोपाष्टमी गुरू नानक जयन्ती
9.	मार्गशीष		
10.	पौष	14 जनवरी	मकर संक्रान्ति
11.	माघ	कृष्ण पक्ष चतुर्थी	चौथ व्रत
12.	फाल्गुन	शुक्ल पक्ष एकादशी कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	ढूण्ढ़ पूजन होलिका दहन

(स्रोतः परिमाणर्गण के दौरान प्राप्त जानकारी एवं अनुभव के आधार पर)

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

3.1 तीज– राजस्थान में कहावत है 'तीज तुंहारा बावड़ी, ले डूबी गणगौर...'। यह कहावत शेखावाटी में पूरी तरह चरितार्थ होती है। क्योंकि चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की तृतीया से लेकर श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया के मध्य के चार माह में कोई बड़ा त्योहार नहीं आता है।[29]

इस दिन तीज की सवारी निकाली जाती है। खरीफ की फसल की बुवाई के लिये किसान इस पर्व पर वर्षा की महिमा व अनुमान व्यक्त करते हैं। तीज महिलाओं, युवतियों व विशेष कर नव विवाहिताओं के लिये एक बड़ा पर्व है। यह उमंगों का त्योहार है। इस दिन महिलायें व बालिकायें हाथों व पैरों में मेहंदी लगाती हैं, बागों में झूला झूलती हैं तथा आपस में मनोविनोद करती हैं। इस तरह यह त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।[30] तीज का त्योहार विवाह के पश्चात् पीहर में मनाने की परम्परा है। एक दिन पहले ससुराल की ओर से होने वाली या नव वधु के लिए 'सिंजारा' भेजा जाता है। जिसमें नव वधु के लिए प्रसाधन सामग्री, नये कपड़े व मिष्ठान उपहार के रूप में दिए जाते हैं। यह त्योहार भगवान शिव व माता पार्वती को समर्पित है। इस दिन महिलायें व बालिकायें सौभाग्य तथा अच्छे पति की कामना के निमित्त भगवान शिव व माता पार्वती का व्रत करती हैं।[31] शिवमन्दिरों में कथा सुनकर शाम को चन्द्रमा को अर्ध्य देती हैं।[32] भविष्य पुराण में भी उल्लेख किया गया है कि तीज के व्रत और पूजन से सुहागन स्त्रियों का सौभाग्य बढ़ता है और कुआंरी कन्याओं के विवाह का योग प्रबल होकर मनोनुकूल वर प्राप्त होता है।

बालिकाएं श्रावण शुक्ल तृतीया को मनाए जाने वाले इस त्योहार के अवसर पर अपने बनाए हुए गुड्डे–गुड़ियों का विसर्जन अपने ग्राम कस्बे में स्थित जोहड़ या तालाब में करती है।[33] शेखावाटी के लगभग हर कस्बे व गांव में तीज अवसर पर विशेषकर जल धरोहर के नज़दीक मेले लगते हैं। इन मेलों में रामगढ़ में अणतरामजी का जोहड[34], फ़तेहपुर में घड़वा जोहड़ा[35], बिसाऊ में धवलपाळिया[36] व चूरू के जौहरी सागर[37] पर लगने वाले मेले क्षेत्र के प्रमुख मेले कहे जा सकते हैं।

फतेहपुर स्थित महावीर प्रसाद की हवेली में जो आज इस क्षेत्र में भूतों की हवेली के नाम से भी जानी जाती है। इसमें सावन की तीज का त्योहार चित्रित है जिसमें कृष्ण को तालाब के किनारे राधा को झूला झूलाते हुए दिखाया गया है।[38]

3.2 शीतला माता– यह त्योहार चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमीं को मनाया जाता है। इसे स्थानीय भाषा में 'बास्योड़ा' भी कहा जाता है क्योंकि इस दिन लोग ताजा भोजन न कर बासी भोजन करते हैं।[39] शीतला माता की पूजा पूरे भारतवर्ष में होती है तथा इन्हें भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न नामों से पूजा जाता है। उत्तर प्रदेश में इन्हें माता या महामाई, पश्चिमीं भारत में माई, अनगा और राजस्थान में साध, शीतला या सेडळ माता के नाम से पूजा जाता है। शीतला शब्द का मूल अर्थ है शीतल अर्थात् शान्त। ऐसा विश्वास किया जाता है कि शीतला माता चेचक के रूप में प्रगट होकर तेज बुखार वाले रोगी को राहत प्रदान करती है।[40]

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

शेखावाटी क्षेत्र के प्रायः प्रत्येक नगर और ग्राम में शीतला माता के मन्दिर हैं। नवलगढ़ में शीतला माता का मन्दिर मुख्य बाजार में स्थित है। जनश्रुति के अनुसार यह मन्दिर नवलगढ़ कस्बे के निर्माण से पूर्व का बना हुआ है। सीकर में शीतला माता का मन्दिर नये दूजोद गेट के बाहर कल्याणजी के मन्दिर के पीछे स्थित है। मन्दिर में शीतला माता की पूर्वाभिमुखी मूर्ति प्रतिष्ठापित है। शीतला अष्टमीं को यहां मैदान के बाहर मेला भरता है। इसके अतिरिक्त उदयपुरवाटी के बाघोरा के तालाब के किनारे शीतला माई का विशाल मेला लगता है। जहां बने शीतला के मन्दिर में लोग मिट्टी के बने करवों बासी भोजन अर्पित करते हैं। मिट्टी के प्यालों में बासी भोजन बांटने की प्रथा आज भी शेखावाटी क्षेत्र में प्रचलन में मोजूद है।[41]

3.3 रामनवमी– यह पर्व चैत्र सुदी नवमीं को शेखावाटी में बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन भगवान राम का जन्म अयोध्या में हुआ था। इस दिन भगवान राम के भक्त व्रत रखते हैं। रामजी के मन्दिरों को सजाया जाता है और उनमें भजन कीर्तन किया जाता है। बिसाऊ का रामाणा जोहड़ का नाम भगवान राम के नाम पर किया गया है। इस जोहड़ पर वर्षो से होने वाली रामलीला क्षेत्र की सबसे बड़ी रामलीला कहलाती है।[42]

3.4 गणेश चतुर्थी– यह त्योहार शेखावाटी क्षेत्र में भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को गणेशजी के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है।[43] इस दिन घरों के द्वारों के ऊपर विराजमान तथा मन्दिरों में प्रतिष्ठापित गणेश मूर्तियों की पूजा–अर्चना की जाती है तथा मोदक का भोग लगाया जाता है। इस दिन लोग रणथम्भोर स्थित गणेशजी के दर्शनों हेतु भी जाते हैं। गणेश चतुर्थी पर जनश्रुति प्रचलित है कि इस दिन चन्द्र दर्शन नहीं करना चाहिए। इस दिन सायंकाल में भगवान गणेशजी की प्रतिमा का विसर्जन नजदीक के तालाब में किया जाता है। कभी सीकर के माधवसागर तालाब में गणेशजी की प्रतिमा का ढ़ोल तासों के साथ विसर्जन किया जाता था।[44]

3.5 दुर्गाष्टमी– यह त्योहार चैत्र व आसोज माह के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से अष्टमीं या नवमीं तिथि तक मनाया जाता है।[45] मां दुर्गा के मन्दिरों को सजाने के साथ ही घरों में भी मां दुर्गा की घट स्थापना की जाती है। भक्त नवरात्रों में आठ–नौ दिन तक व्रत रखते हैं तथा देवी का पाठ करते हैं। शेखावाटी में इस समय अस्थायी मन्दिरों की भी स्थापना की जाती है। मन्दिरों में मां दुर्गा के दर्शन हेतु दूर–दूर से लोग आते हैं।

अष्टमीं के दिन मां दुर्गा की स्तुति में क्षेत्र में विशाल भजन संध्या का आयोजन किया जाता है। इस दिन लगभग हर गांव, कस्बा व शहर की गली–गली माता रानी के जयकारों से गुंजायमान हो उठती है। अंतिम नवरात्र को 'महानवमी' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन मां देवी की प्रतिमा को विशाल जलसे के साथ नाचते गाते हुए समीप के जलाशय में विसर्जित कर दिया जाता है। यह जलाशय शेखावाटी का कोई जोहड़ या तालाब होता है। इस प्रकार के जोहड़ों में झुन्झुनूं का समस तालाब व जीतमलजी का जोहड़, बिसाऊ का धवळपालिया तालाब, मलसीसर का बंका तालाब, अलसीसर का मरोदिया तालाब, मण्डावा का चौखाणी जोहड़ा,

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

पौंख का हरिनारायणजी का जोहड़ व रामगढ़ का अणतरामजी का जोहड़, फतेहपुर का घड़वा जोहड़ा, लक्ष्मणगढ़ का तीजां वाला या सेठ गुमानीरामजी का जोहड़ा, सीकर का माधवसागर, बलारां का जोहड़ इसी प्रकार की जल धरोहर है। जहां कभी भी माता रानी की प्रतिमां के खण्डित पुतलों को देखा जा सकता है।[46]

3.6 कार्तिक स्नान– शेखावाटी में कार्तिक स्नान एक बड़ा महात्म्य है। ये स्नान क्षेत्र की महिलाओं द्वारा अपने परिवार व कुटुम्ब की सुख समृद्धि व उद्धार हेतु किया जाता है। यह स्नान कार्तिक माह की प्रतिपदा तिथि से प्रारम्भ होकर माह की पूर्णिमां को लगातार एक माह तक सम्पन्न होता है। स्त्रियां रात्रि के तृतीय पहर में उठकर अपने नजदीक के कुएं, बावड़ी, जोहड़ या तालाब पर सामूहिक रूप से स्नान के लिये जाती थी। स्नान के पश्चात् 'म्हे थानैं बूझां, म्हारा श्री ओ ठाकुरजी...थारी आज्ञा म्हा पर होय, कार्तिक न्हास्यां ओ भगवान...' जैसे भजन गाती और सूर्योदय से पूर्व लौट आया करती थी। घर आने के पश्चात् खेजड़ीं (शेखावाटी में इसे तुलसी की संज्ञा दी जाती है।) के पेड़ के पास दीपक जलाकर अपने साथ लाये जल को चढ़ाती थी। पूजन के पश्चात् इली घुणिया, गंगा व जमुना, लपसी व तपसी, जाट का बाटका व अन्त में विनायकजी की कथा सुनती थी।[47] इस दौरान वे अपनी घर गृहस्थी की बातें भी कर लिया करती थी। इस स्नान का धार्मिक महत्व के साथ–साथ स्वास्थ्य के लिहाज से तो बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान था। इससे उनका शरीर पूरा दिन तरोताजा रहता था। आज कल कार्तिक स्नान लुप्तप्राय सा हो गया है।

3.7 गोपाष्टमीं– यह कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमीं को मनाया जाता है।[48] यह गौमाता को समर्पित पर्व है जिसे शेखावाटी में विशेषकर गौशालाओं में विशेष रूप से मनाते हैं। इस दिन गाय का श्रृंगार कर पूजा की जाती है।[49] फतेहपुर में बुधगिरि मंढी में स्थित गौशाला व नवलगढ़ स्थित पिंजरापोल गौशाला में इसे बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जाता है।

पशुओं का जोहड़ों के साथ बड़ा गहरा रिश्ता है। जोहड़ का एक हिस्सा प्रायः गौघाट होता है जिसके बगैर किसी भी जोहड़ के निर्माण की परिकल्पना नहीं की जा सकती।[50] इन जोहड़ों के समीप पशुओं के मेले लगते हैं। चूरू स्थित पीथाणा जोहड़ा में गोपाष्टमी को आज भी मेला लगता था।[51]

3.8 मकर संक्रान्ति– यह पर्व विक्रम संवत् के पौष/माघ मास के दौरान 14 जनवरी के दिन मनाया जाता है।[52] इस दिन लोग यहां के किसी तीर्थ स्थल यथा किरोड़ी, लोहार्गल, त्रिवेणी, सकराय, गणेश्वर आदि पर जा कर पवित्र जल में स्नान करते हैं। यह मूलतः सूर्य उपासना का पर्व है। इस दिन सूर्य भगवान की पूजा की जाती हैं। इस दिन सूर्य भगवान दक्षिणायन से उत्तरायण होना शुरू कर देते हैं तथा मकर राशि में आ जाते हैं।[53]

इस दिन मिष्ठान की दुकानों पर घेवर की अत्यधिक बिक्री होती है। लोग असहायों को दानस्वरूप तिल, तिल के लड्डु, ग़ज़क आदि देते हैं व पशुओं को चारा डालते हैं। शेखावाटी में लोग इस दिन अपने घरों, दुकानों

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

इत्यादि इमारतों की छतों पर चढ़कर पतंग उड़ाते हैं तथा आनन्द लेते हैं। इस दिन घरों में मूंग–मोठ की दाल के बड़े तथा गेहूं के आटे के मीठे गुलगुले बनाये जाते हैं।[54]

3.9 गणगौर– गणगौर का त्योहार शेखावाटी का सर्वाधिक मनाया जाने वाला उत्सव है जो आज भी प्रचलन में है। यह पूरी तरह महिलाओं का त्योहार है जिसका केवल महिलाओं एवं बालिकाओं पूजन किया जाता है। यह एक पखवाड़े तक मनाया जाता है, जो कि प्रतिवर्ष चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को समाप्त होता है। यह हिन्दू स्त्रियों का एक मुख्य त्योहार है।[55]

गणगौर का उत्सव शेखावाटी में विशेषकर राजपूत लोग मनाते हैं। ठिकानेदार की हैसीयत के अनुसार शिव (ईशर) और पार्वती (गौर) की काष्ठ की सवारी निकाली जाती थी। ठिकाना जितना बड़ा होता था यह उत्सव उतनी ही भव्यता से मनाया जाता था।[56] शेखावाटी के विभिन्न स्थानों पर निर्मित स्थापत्य के भित्ति चित्रों तथा लोगों के साथ हुयी बातचीत में पता चलता है कि यहां के शासक, ठाकुर, कर्मचारी वर्ग भी इस उत्सव में उत्साह व उल्लास के साथ भाग लेते थे। नगाड़ा, ढ़फ, निशान और चौबदार घोड़ों पर जुलूस के साथ चलते थे। ठाकुर हाथी पर सवार होते थे और उनके अंगरक्षकों के दल पंक्तिबद्ध घोड़ों पर सवार होकर ठाकुर के पीछे चलते थे। आस–पास के ग्रामों के लोग गणगौर की सवारी का दृश्य देखने के लिये नगरों में आते थे। गणगौर की सवारी का एक मनोहारी दृश्य, बाला किला दुर्ग स्थित शीशमहल के भित्ति चित्रों में विविध रंगों में चित्रित किया गया है, जो दर्शनीय है।[57]

प्रायः गणगौर का मेला हर ठिकाने में भरता था। इस मेले में स्त्रियां व बालिकायें सुन्दर परिधान पहन कर जाती हैं जिससे मेले की आभा देखते ही बनती है। महिलाएं व अविवाहित कन्याएं अपने सिर पर मिट्टी की झावली में गणगौर की प्रतिमाएं मंगल गीत गाती हुयी लेकर आती है। प्रतिमाओं को गांव या कस्बे के कुएं, बावड़ी या तालाब पर ले जाया जाता है। जहां पूरे विधि विधान के साथ उनका पूजन कर मिट्टी की प्रतिमाओं का विसर्जन कर दिया जाता है।[58] इस प्रकार की प्रमुख जल धरोहर में झुन्झुनूं का समस तालाब[59], सीकर का माधवसागर तालाब[60], पौंख का हरिनारायणजी का तालाब[61] सम्मिलित किये जा सकते हैं। यहां यह स्मरणीय है कि काष्ठ निर्मित प्रतिमाओं को पुनः अपने स्थान पर प्रतिष्ठापित कर दिया जाता है।

संदर्भ :

---

[1] मिश्र, रतनलाल, प्रथम संस्करण 1998 : शेखावाटी का नवीन इतिहास, कुटीर प्रकाशन, मण्डावा (झुन्झुनूं), पृ. सं. 165, 185 व 186।
[2] शेखावात, सुरजन सिंह, 1989 : शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास, झुन्झुनूं, श्री शार्दुल एज्युकेशन ट्रस्ट, पृ. सं. i–viii
[3] पूर्वोक्त।
[4] मिश्र, रतनलाल, प्रथम संस्करण 1998 : शेखावाटी का नवीन इतिहास, पृ. सं. 2।
[5] शेखावात, सुरजन सिंह, 1989 : शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास, पूर्वोक्त।
[6] देखें, राजस्थान सरकार की विभागीय वेबसाइट https://www.sikar.rajasthan.gov.in व https://www.jhunjhunu.rajasthan.gov.in
[7] शेखावाटी क्षेत्र का अर्द्ध मरूस्थलीय भूभाग, जल की कमीं, व्यवस्थित मार्गों की कमीं एवं अल्प उपजाऊ क्षेत्र इसकी विषमता को परिभाषित ही नहीं करते बल्कि इसके अस्तित्व को भी प्रमाणित करते हैं। देखें, रतनलालजी मिश्रा का शेखावाटी का नवीन इतिहास, अध्याय चतुर्थ, पृ. सं. 52

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
e-ISJN: A4372-3118

[8] विशेषकर शेखावाटी क्षेत्र की जोहड़ निर्माण परम्परा सम्पूर्ण विश्व में अद्वितीय है। जिसमें यहां के लोगों का जीवट जीवनशैली से ओतप्रोत इतिहास व संस्कृति समाहित है।

[9] सिंह, सोमेश कुमार व मेहता, अमित 2013 : ऐतिहासिक व सांस्कृतिक शोध के रूप में शेखावाटी का स्थापत्य, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के इतिहास विभाग में पीएच.डी. उपाधि हेतु अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, पृ. सं. 189

[10] मेला लोगों के मेल मिलाप का वह स्थल होता जहां लोग अपनी रोजमर्रा की ज़िदगी से कुछ समय निकालकर एक जगह एकत्रित होते हैं तथा सम्बन्धित देवी–देवता को परिक्रमा देने तथा नारीयल या प्रसाद चढाने के उपरान्त अपने रिश्तेदारों से मिलकर अपनी सुख–दुख की बाते करते हैं।

[11] सभी प्रकार की जल धरोहर किसी न किसी पंथ या सम्प्रदाय से जुड़ी हुयी है। इन पर किसी न किसी सम्प्रदाय या पंथ से जुड़ा कोई न कोई मन्दिर या पीठ स्थापित होती है। जो जल धरोहर को साफ सुथरा बनाये रखने में धार्मिक विश्वास को सबलता प्रदान करती है।

[12] लोहार्गल स्थित सूर्य मन्दिर में मोजूद 'लोहार्गल महात्म्य' से साभार उद्धृत।

[13] पूर्वोक्त।

[14] इस गदा के साक्षात् दर्शन के आधार पर।

[15] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर, पृ. सं. 207

[16] कावड़ काष्ठ की लकड़ी से बना एक ऐसा गतिमान मन्दिर होता है जिसमें दोनों सिरों पर लोटों में लोहार्गल के सूर्यकुण्ड के गोमुख से निकला पवित्र जल भरा होता है। जिसे भगवान भोलेनाथ के मन्दिर में स्थित शिवलिंग पर चढ़ाया जाता है।

[17] मैंने स्वयं लोहार्गल स्थित मालकेतु की तीन दिवसीय परिक्रमा की है। उसी दौरान जो प्रत्यक्ष देखा, उसी आधार पर वर्णित।

[18] राजस्थान ज़िला ग़ज़ेटियर, सीकर, 1988, पृ. सं. 473

[19] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. सं. 208

[20] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[21] प्रकाश, टी. सी. : शेखावाटी वैभव, पृ. सं. 118

[22] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. सं. 208

[23] पूर्वोक्त, पृ. सं. 207

[24] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[25] पूर्वोक्त।

[26] शर्मा, उदयवीर व जांगिड़, अमोलकचन्द, 1988 : बिसाऊ दिगदर्शन, तरूण साहित्य परिषद्, बिसाऊ, पृ. सं. 168

[27] पूर्वोक्त।

[28] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[29] जैसा मेरी पूजनीय माताजी श्रीमती सुगनी देवी ने मुझे बताया।

[30] व्यास, प्रकाश : राजस्थान का सामाजिक इतिहास, पृ. सं. 206

[31] जैसा मेरी पूजनीय माताजी श्रीमती सुगनी देवी ने मुझे बताया।

[32] शेखावाटी के इतिहास व संस्कृति के जानकार नवलगढ़ के निवासी श्री गोपीरामजी मुरारका ने सादर भेंट के दौरान बताया।

[33] जैसा मेरी पूजनीय माताजी श्रीमती सुगनी देवी ने मुझे बताया।

[34] जोहड़ के समीप स्थित गौशाला के सचिव श्रीमान् पारीक साहब ने परिमार्गण के दौरान प्राप्त जानकारी के आधार पर।

[35] फ़तेहपुर स्थित सरस्वती पुस्तकालय के सचिव श्रीमान् अरविन्द कुमार शर्मा से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

[36] शर्मा, उदयवीर व जांगिड़, अमोलकचन्द, 1988 : बिसाऊ दिगदर्शन, पृ. सं. 166

[37] सुजस वार्षिकी–1997 के अंक में राजकुमार पारीक का शेखावाटी के सदाबहार जोहड़े नाम से प्रकाशित लेख, पृ. सं. 28

[38] प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[39] राजस्थान ज़िला ग़ज़ेटियर, सीकर, 1988, पृ. सं. 80

[40] आहूजा, आर. : राजस्थान लोक संस्कृति और साहित्य, पृ. सं. 68

[41] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[42] शर्मा, उदयवीर व जांगिड़, अमोलकचन्द, 1988 : बिसाऊ दिगदर्शन, पृ. सं. 144–152

[43] व्यास, प्रकाश : राजस्थान का सामाजिक इतिहास, पृ. सं. 211

[44] स्थानीय सूचना, जनसम्पर्क व प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[45] रामगढ़ के पण्डित श्री वल्लभ मनीराम के शेखावाटी में सर्वाधिक प्रचलित पंचांग के आधार पर।

[46] प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।

[47] जैसा मेरी पूजनीय माताजी श्रीमती सुगनी देवी व मेरी विदुषी बहन ने मुझे बताया।

[48] रामगढ़ के पण्डित श्री वल्लभ मनीराम के शेखावाटी में सर्वाधिक प्रचलित पंचांग के आधार पर।

[49] नवलगढ़ के गौभक्त ठाकुर आनन्दसिंह शेखावत ने जैसा मुझे सादर भेंट के दौरान बताया।

[50] देखें, मेरा लेख Johad Rain Water Harvesting and Conservetion System of Shekhawati Region in India : A Historical-Cultural Study, 4th Dubai International Conference on Social Science and Humanities (ICSSH), 17-18 Feb.2018, Dubai, UAE, Globle Research & Development Services, Conference Schedule, Page No. 30-31

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-III
Jan. 2018
e-ISJN: A4372-3118

[51] सुजस वार्षिकी–1997 के अंक में राजकुमार पारीक का शेखावाटी के सदाबहार जोहड़े नाम से प्रकाशित लेख, पृ. सं. 28
[52] राजस्थान ज़िला ग़ज़ेटियर, सीकर, 1988, पृ. सं. 79
[53] सिंह, चन्द्रमणि : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, पृ. सं. 159
[54] पूर्वोक्त, पृ. सं. 163
[55] राजस्थान ज़िला गज़ेटियर, सीकर, 1988, पृ. सं. 80
[56] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. सं. 175
[57] शेखावत, सुरजनसिंह 1984 : नवलगढ़ का संक्षिप्त इतिहास, मुरारका प्रिण्टर्स, पृ. सं. 6
[58] प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर।
[59] आर्य, एच. एस., द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. सं. 176
[60] सीकर के इतिहास के जानकार महावीर पुरोहित जी से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
[61] गुड़ा ग्राम के 90 वर्षीय इतिहास व ज्योतिष के ज्ञाता मक्खनलाल जी पारीक से सादर भेंट के दौरान प्राप्त हुई जानकारी के आधार पर।

****